International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.6 July – Aug 2022

अधिगम अशक्तता युक्त विद्यार्थियों की पहचान एंव उनकी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका-

श्रीमति कंचन चौरसिया
सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)भारत
Corresponding Author - **श्रीमति कंचन चौरसिया**
Email- kanchanchourasiya22@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7155630

सारांश-:
आज शिक्षा के सार्वभौमिकरण के प्रयास के तहत विशिष्ट शिक्षा के संप्रत्यय को बल मिला है। आज प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखकर उनकी वैयक्तिक शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शैक्षणिक कार्यक्रम को संचालित किया जा रहा है। परंतु आज भी लोगों में जागरूकता का अभाव है। विशिष्ट बालक कौन है इस संदर्भ में या तो लोगों को जानकारी ही नहीं है या फिर अपूर्ण जानकारी है। प्रत्येक प्रकार की विशिष्टता की अपनी प्रकृति होती है और उस प्रकृति के अनुकूल ही हमें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। अतः यह आवश्यक है कि हम विशिष्ट बालकों के विभिन्न प्रकार को जाने एवं समझें। आइंस्टीन, पामस एल्बट एडीसन, स्टीफन हॉकिन्स ,रूसवैल्ट जैसे नाम किसी परिचय के मोहताज नही हैं। अगर पूछ जाए कि इन महान व्यक्तियों में क्या सामान्य विशेषताएँ हैं? तो शायद उत्तर न दे पायें। ये सभी महान व्यक्ति किसी न किसी अधिगम अशक्तता के कारण विद्यालय एवं परिवार में उपेक्षित रहे, परंतु इन्होंने अपने आविष्कारों से समस्त संसार को आश्चर्यचकित कर दिय। अतः आज के युग में यह विचारणीय है कि इस प्रकार की अशक्तता की पहचान व निदान हो सके।

मुख्य बिन्दु- *अधिगम, अशक्तता, शिक्षा, पहचान, शिक्षक*

अधिगम असमता/अशक्तता/नियोग्यता, दो अलग अलग पदों से मिलकर बना है। जिसमें अधिगम शब्द का आशय सीखने से है तथा अक्षमता या अशक्तता का आशय क्षमता या सीखने की योग्यता/शक्ति की अनुपस्थिति से है।

इतिहास से पता चलता है कि अधिगम अक्षमता शब्द की उत्पत्ति १९६० के दशक की शुरूआत में और ६ अप्रैल १९६३ को हुई टिप्पणियों के आधार पर डॉ. सेमुअल किर्क द्वारा की गई थी, जो कांसेप्ट ऑफ एक्सप्लोरेशन ऑफ हैंडसेप्टिंग हैंडीकैप्ड चाइल्ड पर ६ अप्रेल १९६३ को की गई थी। उनका प्रस्तावित लेक्चल उत्साहपूर्वक प्राप्त किया गया था, तथा प्रतिभागियों को एकजुट करने में मदद के लिए एक संगठन के रूप में जाना जाता है, जिसे एसोसिएशन फार चिल्ड्रेन फॉर लर्निंग डिसेबिलिटीज, आज के लर्निंग डिसएबिलिटी एसोसिएशन के अग्रदूत (लर्नर,२०००) कहा जाता है। डॉ. किर्क १९६३ ने शिकागो में एक सम्मेलन में कहा-एक सीखने की विकलांगता मंदता विकार, या भाषण, भाषा, पढ़ने, लिखने अंकगणित या किसी अन्य स्कूल विषय के प्रक्रियाओं में एक या अधिक विकास में देरी को संदर्भित करती है एक संभावित मस्तिष्क संबंधी शिथिलता और/या भावनात्मक या व्यवहार संबंधी गड़बड़ी के कारण मनोवैज्ञानिक बाधा है। यह मानसिक मंदता, संवेदी अभाव या सांस्कृतिक और निर्देशात्मक कारकों का परिणाम नहीं है। किर्क ने अपने अध्ययनों के फलस्वरूप यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि अधिगम अशक्तता मंदबुद्धिता को संदर्भित करता है, एक में देरी के विकास का एक विकार विशेष भाषा, पढ़ने, वर्तनी, लिखित या अंकगणित की प्रक्रियाओं से अधिक है जो एक संभावित मस्तिष्क संबंधी शिथिलता और भावनात्मकता या व्यवहार संबंधी गड़बड़ी से उत्पन्न होता है। हालांकि अधिगम अक्षमता अन्य प्रकार की अशक्तता जैसे-संवेदी असमता, मानसिक मंदता, गंभीर संवेगात्मक विसोभ या सॉस्कृतिक भिन्नता, अनुपयुक्तता या अपर्याप्त अनुदेशन के प्रभाव के कारण होता है। परंतु केवल यह दशाएँ अधिगम अशक्तता या अक्षमता को प्रदर्शित नहीं करती है। प्रत्येक व्यक्ति का शिक्षण ग्रहण करने का तरीका अलग-अलग होता है कुछ लोग सुनकर चीजों को सीख लेते हैं तो कुछ देखकर अच्छे से सीखते हैं। सामान्यतः व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुरूप ही शिक्षण के क्षेत्र में प्रदर्शन करता है, परंतु कुछ ऐसे भी होते हैं, जो क्षमता के बावजूद शैक्षणिक

क्षेत्र में पिछड़ापन दिखलाते हैं। इसका प्रमुख कारण शिक्षण में निहित प्रकियाओं जैसे-सुनना, सोचना या चिंतन करना, प्रत्यक्षण करना, समृति आदि में त्रुटियॉं होती हैं। इस स्थिति को अधिगम अशक्तता या अक्षामता कहा जाता है। ऐसे बच्चे देखने में पूर्णतः सामान्य होते हैं इनकी बौद्धिक क्षामता भी सामान्य होती है लेकिन इसके बावजूद उनके शिक्षण संबंधी कार्यो तथा स्मरण में त्रुटियॉं देखने को मिलती हैं। इनमें शैक्षणिक निष्पादन से संबंधित कठिनाइयॉं, जैसे-नकल करना, लेखन कला, गणितीय संप्रत्ययों को समझना, लिखने से संबंधित कठिनाइयॉं, पठन सम्बन्धित समस्याएँ तथा भाषा एवं स्वर में उतार-चढ़ाव से सम्बन्धित जो बौद्धिक योग्यता में कमी के कारण शैक्षणिक क्षेत्र में पिछड़ेपन का लक्षण दिखलाते हैं, ऐसे बच्चों को मंद शैक्षिक (slow learner) कहा जाता है।

जॉन्सन एवं मॉरास्काई (१९८०) के अनुसार देखा जाए तो शिक्षण अशक्तता के सम्बंध में पहला विस्तृत अध्ययन मॉर्गन (१८९६) के कार्यों में निहित है। इन्होंने इसे दृष्टिहीनता (Blindness) के नाम से पुकारा। इसी प्रकार सैमुअल ऑर्टन (१९३७) तथा बिर्क (Birch 1957) ने प्रमस्तिष्कीय प्रभुत्व का शिक्षण के ऊपर प्रभाव का वर्णन किया एवं मानसिक मंदता के क्षत्र में अध्ययन कर अधिगम अक्षामता के क्षेत्र को विकसित करने में सहयोग किया। सन १९६७ जानसन तथा माइल बस्ट ने ऐसे बच्चों में पाये जाने वाले स्नायु सम्बन्धी दोषों का वर्णन किया। इस क्षेत्र में १९६२ तक विकास काफी धीमी गति से हुआ। पहली बार १९६२ ई. में किर्क (kirk) ने इसकी एक विरोधी परिभाषा दी। इन्होंने इसे अधिगम अक्षामता (Learning disability) के नाम से पुकारा। इस कदम से व्यावसायिक कार्यकर्ताओं के बीच इन्हें काफी लोकप्रियता एवं समर्थन मिला तथा ऐसे बच्चों के लिए कई संगठन बनाये गये।

सन १९६८ ई. में यू.एस. नेशनल एडवाइजरी कमेटी ऑन हैण्डीकैप्ड चिल्ड्रेन ने इसे परिभाषित किया और अब यही परिभाषा विश्व के सभी भागों में उपयोग की जा रही है। अधिगम अशक्तता को परिभाषित करने का प्रयास समय समय पर विषय विशेषज्ञों ने विभिन्न प्रकार से किया है, जिनमें से कुछ प्रमुख परिभाषाओं का वर्णन कमशः है-

डी. एस. एम. चतुर्थ के अनुसार-"यदि काई बच्चा अथवा व्यक्ति नियमित शिक्षण कार्यक्रम से लाभांवित नहीं हो रहा है, जबकि उसकी बौद्धिक क्षमता कम नहीं होती है, वह सामाजिक रूप से वंचित नहीं है एवं किसी प्रकार की दैहिक तंत्रकीय दुषिक्रया का स्पष्ट लक्षण प्रकट नहीं करता है, तो उसे अधिगम अक्षम व्यक्ति के रूप में चिन्हित किया जा सकता है। "

नेशनल ज्वाइंट कमेटी ऑन लर्निंग डिसेबिलिटी (१९८५, १९८८)- यू. एस. ए. के अनुसार -" अधिगम विकृति एक सामान्य पहलू है जो विभिन्न प्रकार की विकृति के समूहों को इंगित करता है तथा स्पष्ट रूप से सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, तार्किकता, गणितीय क्षमता में कमी एवं उपयोग करने की कठिनाई के रूप में प्रकट होता है। यह विकृति स्वभाविक रूप से व्यक्ति में केन्द्रीय स्नायु तंत्र की गड़बड़ी का परिणाम होता है और यह कमी जीवन पर्यंत कभी भी हो सकती है। व्यक्ति में अधिगम विकृति के साथ स्वतः नियंत्रित व्यवहारों, सामाजिक प्रत्यक्षण एवं सामाजिक अंतःक्रिया में समस्या भी हो सकती है, परंतु इनका अधिगम विकृति में कोई योगदान नहीं होता है। यद्यपि अधिगम विकृति अन्य अक्षामता के साथ भी हो सकती है एवं बाह्य रूप से प्रभावित कर सकती है। अतः अधिगम विकृति किसी अक्षामता के परिणामस्वरूप या प्रभाव का परिणाम नहीं होता है।"

वर्ष १९९४ में अमेरका की अधिगम अक्षामता की राष्ट्रीय संयुक्त समिति (द नेशनल ज्वाइंट कमेटी ऑन लर्निंग डिसेबिलिटिज्म) ने अधिगम अक्षमता को परिभाषित करते हुए कहा कि " अधिगम अक्षामता एक सामान्य पद है, जो मानव में अनुमानतः केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के सुचारू रूप से कार्य नहीं करने के कारण उत्पन्न आंतरिक विकृतियों के विषय समूह, जिसमें बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने तर्क करने या गणितीय क्षमता के प्रयोग में कठिनाई शामिल होती है, को दर्शाता है। जीवन के किसी भी पड़ाव पर यह उत्पन्न हो सकता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिगम अशक्तता एक व्यापक सम्प्रत्यय है , जिसके अंतर्गत वाक्, भाषा, पठन, लेखन एवं अंकगणितीय प्रक्रियाओं में से एक या अधिक के प्रयोग में शामिल एक या अधिक मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति को शामिल किया जाता है, जो अनुमानतः

केन्द्रीय तंत्रिका के सुचारू रूप से कार्य नहीं करने के कारण उत्पन्न होता है। यह स्वभाव से आंतरिक होता है।

अधिगम अक्षमता पर हुए विभिन्न अध्ययनों के अनुसार सामान्य जनसंख्या में अधिगम अक्षम बच्चों का प्रतिशत ५-१० है। वैंडप्ट के अनुसार यू. एस. ए. में पठन कौशल विकृति तथा गणितीय विकृति का वितरण क्रमशः ४ प्रतिशत तथा १ प्रतिशत है। यह व्यापकता विद्यालय के बच्चों की जनसंख्या पर आधारित है। भाषा विकृति का विरण २-५ प्रतिशत तक है। भारत में लगभग १२.५९ लाख विद्यालय जाने वाले बच्चे इससे पीड़ित है। स्मिथ ;उपजीए १९९१द्ध के अनुसार आज भी विद्यालय में ऐसे बहुत से बच्चे है जिनकी अभी तक शिक्षण अधिगम अक्षमता की पहचान नहीं की जा सकी है। अनुमान है कि लगभग १० प्रतिशत बच्चे शिक्षण अक्षमता से ग्रसित है। जबकि इनमें से ४.५ प्रतिशत बच्चे तीव्र अधिगम अक्षामता से ग्रसित हैं। यह अंतर मुख्य रूप से विकित्सकीय परिपक्वता, सामाजिक एवं मस्तिष्कीय संरचनाओं तथा कार्यों में अंतर के कारण होता है। भारत में इसकी व्यापकता दर के संबंध में काई स्पष्ट सांख्यिकी आँकड़ा प्राप्त नहीं है।

अधिगम अशक्तता या निर्योग्यता से ग्रसित बच्चों में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ देखने को मिलती है, चाहे वह लिखने से सम्बन्धित हों, पढ़ने से अथवा गणितीय कौशल से। ऐसे बच्चों में प्रायः निम्नलिखित प्रकार के लक्षण परिलक्षित होते हैं-

- बच्चे की अन्तःशक्ति या क्षमता एवं उसकी उपलब्धि के बीच गंभीर अंतर होता है।
- बच्चे की शैक्षणिक निम्न स्तर की होती है।
- निष्पादन के विभिन्न क्षेत्रों में काफी अंतर पाया जाता है।
- ऐसे बच्चे अपने सामान्य बौद्धिक, अंतःशक्ति या उचित शिक्षण के माध्यम के बावजूद शैक्षणिक पिछड़ेपन के लक्षण प्रदर्शित करते हैं।
- इन बच्चों में मुख्यतः शैक्षणिक कौशलों एवं निष्पादन से सम्बंधित जो कमियाँ दिखलाई देती हैं, वह मानसिक मंदता किसी स्नायुतंत्रकीय विकृति, सामाजिक पिछड़ापन अत्यादि का परिणाम नहीं होता है।
- इसके लक्षणें का आगमन प्रायः बाल्यावस्था या शैशवावस्था में होता है लेकिन इसकी पहचान तभी हो पाती है जब बच्चा विद्यालय जाने के योग्य हो जाता है।
- इनमें दृश्य प्रत्यक्षीकरण में कमी पाई जाती है।
- तार्किक क्षमता में कमी के साथ-साथ संगठिन एवं एकीकरण के कौशलों में कमी पाई जाती है।
- श्रवण प्रत्यक्षीकरण में भी कमी पाई जाती है।

अधिगम अक्षम बच्चों की समस्याएं मुख्यतः पढ़ने, लिखने, जोड़ने घटाने व गुणनखण्ड इत्यादि से सम्बन्धित होती है, इन समस्याओं को कई आधारों पर विभेदीकृत किया गया है। ये सारे विभेदीकरण अपने उद्देश्यों के अनुकूल है। इस प्रमुख विभेदीकरण ब्रिटिश कोलंबिया (२०११) एवं ब्रिटेन के शिक्षा मत्रालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक " सपोर्टिंग स्टुडेंट्स विद लर्निंग डिसेबिलिटी ए गाइड फार टीचर्स में दिया गया है जो है-

१. डिस्लेक्सिया (पढ़ने सम्बंधी विकार)
२. डिस्ग्राफिया (लेखन संबंधी विकार)
३. डिस्कैलकुलिया (गणितीय संबंधी विकार)
४. डिस्फैसिया (वाक् संबंधी विकार)
५. डिस्प्रेक्सिया (लेखन व चित्रांकन संबंधी विकार)
६. डिसऑर्थोग्राफिया (वर्तनी संबंधी विकार)
७. विजुअल परसेप्सन डिसआर्डर (दृश्य प्रत्यक्षण संबंधी विकार)
८. ऑडिटरी प्रोसेसिंग डिसआर्डर (श्रवण संबंधी विकार)
९. सेंसरी इंटीग्रेशन और प्रोसेसिंग डिसआर्डर (संगठनात्मक पठन संबंधी विकार)
१०. ऑर्गनाइजेशन लर्निंग डिसऑर्डर(संगठनात्मक पठन संबंधी विकार)

इस प्रकार अधिगम अक्षमता को विभिन्न श्रेणियों में विभक्त कर उनके लक्षणों एवं संदर्भित विशेषताओं के आधार पर उनकी पहचान कर उनके निदान एवं उपचार पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अधिगम अक्षम बच्चों की पहचान हेतु यह परम आवश्यक है कि अधिगम अक्षमता के कारणों को जाना जाए।विभिन्न अध्ययनों के परिणामस्वरूप अधिगम अशक्तता के कारणों को ३ भागों में विभाजित किया गया है-

१. जैविक कारण (Biologocial couses)
२. वंशानुगत कारण (Genetic couses)
३. वातावर्णीय कारण (Enivironmental couses)

इन विभिन्न कारणों के आधार पर अधिगम अक्षम बालकों को पहचान की जाती है। इनकी पहचान उतनी शीघ्रता से नहीं हो पाती है। यह बच्चे अन्य बच्चों कह तरह ही सामान्य जीवन जीते हैं और इन्हेंअपने देनिक कार्यों में किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है। इन्हें केवल सोचने, समझने, लिखने व भाषा सम्बंधी कठिनाईयाँ होती हैं। इस प्रकार के बच्चों की पहचान सामान्यतः परीक्षण रहित प्रविधियों (Non testing devices) व परीक्षणयुक्त प्रविधियों (Testing devices) को अपनाकर की जा सकती है।

परीक्षण रहित, प्रविधियों के माध्यम से अधिगम अक्षामता की पहचान हेतु हम निरीक्षण, साक्षात्कार, चैकलिस्ट व रेटिंग स्केल आदि तकनीकों का प्रयोग करते हैं। यद्यपि कुछ व्यवहारगत विशेषताओं जैसे-देखने, सोचने व समझने में कमी, मौलिक अनुदेशनों को समझने व याद करने/रखने की अक्षामता एक कार्य से दूसरे कार्य को करने में कठिनाई, परिवर्तनों से परेशानी आदि शामिल होती है।

विभिन्न प्रकार की परीक्षण युक्त प्रविधियों द्वारा अधिगम असमर्थ बच्चों की पहचान हेतु गणित व भाषा सम्बंधी नेत्रों में आने वाली कठिनाईयों का निदान किया जाता है। यदि बच्चोंकही अधिगम संबंधी कठिनाईयों का समय से निदान नहीं किया जाये तो बच्चों को स्कूल में असफलता का सामना करना पड़ता है। प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर अधिगम असमर्थ बच्चों को पहचाननना आसान होता है। क्योंकि इस स्तर पर विभिन्न प्रकार के उपकरण की उपलब्धता, अध्यापक निरीक्षण व उपलब्धि सूचकांक आदि प्रयोग किए जाते हैं। अतः इस प्रकार की प्रविधियों में वे सभी प्रकार के परीक्षण शामिल किये जा सकते हैं जिनका औपचारिक रूप से प्रयोग अधिगम अक्षामता के मापन हेतु वेसे ही किया जाता है जैसे कि बुद्धि परीक्षणों का बुद्धि मापन हेतु किया जाता है।

इन परीक्षणों की सहायता से हम बालकों को अधिगम कठिनाईयों और अक्षामताओं के बारे में उचित जानकारी एकत्रित कर सकते हैं। इस प्रकार के परीक्षण प्रमुख है-

१. इ्यूरेल द्वारा निर्मित 'इ्यूरेल ऐनालाइसिस ऑफ रीडिंग डिफीकल्टी (Durell Analysis of reading difficulty, 1980)

२. सूचना पठन सूची (Information reading inventory) के द्वारा पठन कौशल पढ़ने का स्तर, त्रुटि के प्रकार और व्यवहारगत विशेषताओं को आसानी से मापा जा सकता है।

३. ग्रेट्स व मैककिलोप (Gates and Mckillop) द्वारा निर्मित ।

इस परीक्षणों के अतिरिक्त योग्यता परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण, दैनिक मूल्यांकन प्रणाली आदि के माध्यम से अधिगम अक्षम बालकों की पहचान की जाती है।

इन बालकों की पहचान होना अतिआवश्यक है। क्योंकि बच्चे ही देश का भविष्य होते हैं और इनकी पहचान न होने के कारण इन्हें अपने जीवन के प्रत्येक आयाम में अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परिवार विद्यालय,समाज व साथी समूह में भी कई बार इन्हें नकारात्मकताओं का सामना करना पड़ता है। जिससे इनमें द्वंद,संघर्ष व कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है जो इनके भविष्य, वर्तमान दोनों में ही बाधा उत्पन्न करती है।

ऐसे स्थिति में इन विद्यार्थियों के जीवन परिवार में माता-पिता तथा कक्षा विद्यालय में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक का ऐसे विद्यार्थियों को नजरअंदार करना उन्हें शिक्षा का दोषपूर्ण होने के साथ ही साथ बालकों के जीवन के साथ अन्याय भी है। परंतु एक शिक्षक का ऐसे विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण तथा सहायता उनके उज्ज्वल भविष्य के प्रति निश्चिंतता प्रदान कर सकता है।

विलियम और हाउन्सेल १९९८ ने अपने लेख अधिगम असमर्थी बालको की शिक्षा आव्यूह में कहा है कि अधिकांश अधिगम असमर्थी बालक में शैक्षिक शक्ति सामान्य बालकों के समान होती है परंतु उनकी शक्तियाँ छुपी हुई होती है जिन्हें उजागर करने के लिए उपलब्धियां प्राप्त करने के लिए उन्हें कुछ मदद की आवश्यकता होती है।

अधिगम असमर्थी बालको के द्वारा सराहनीय कार्य अथवा सफलतापूर्वक किये गये कार्य के प्रति उन्हें सराहें न कि उन पर अधिगम अक्षामता का लेवल चिपकाए। प्रविधियों का प्रयोग कर जैसे कम्प्यूटर का प्रयोग कर अधिगम असमर्थी बालकों के केन्द्रीय ज्ञान हेतु महत्वपूर्ण सलाह देने में प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त शिक्षक द्वारा बालकों को आवश्यकतानुसार कक्षा-कक्ष का संगठन, पर्याप्त

दृश्य युक्त सामग्री की व्यवस्था, बैठक व्यवस्था, आकलन आव्यूह पर ध्यान देना आवश्यक है।

अधिगम बाधित बालकों को उनकी बाधिता के अनुरूप एक या अधिक क्षेत्रों में अध्यापक शिक्षण तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। अधिगम बाधित वाले बालक विपरीत विशेषताओ वाले होते हैं उन्हें विकास के विभिन्न स्तरों पर अपने शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रविधियों की आवश्यकता होती है।

अतः शिक्षक की भूमिका बहुत ही अहम है। क्योंकि शिक्षक बगीचे के समान विद्यालय के विद्यार्थियों (फूलों) का माली होता है जो समय-समय पर ज्ञान, सूझ-बूझ व सकारात्मकता से उन्हें सींचता है तथा उनके अच्छे-बुरे व्यवहारों को कांट-छांट कर उत्कृष्ट बनाता है।

निष्कर्ष- स्पष्ट है कि अधिगम बाधित बालकों की पहचान के पश्चात उनका निदान होना भी अति आवश्यक है। जिसमें शिक्षण की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण व सराहनीय होती है। अतः यह आवश्यक है कि अधिगम असमर्थी बालकों की सहायता करने के लिए सबसे उत्तम कार्य बालकों को उनके उत्तरदायित्व तथा कर्त्तव्यों का निर्धारण करना और सौंपना है, विशेषतः ऐसे बालकों को जो इस समस्या में उलझे हुए हैं उन्हें विशेष सहायता पहुंचाना।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

१. जोसेफ. आर. एस., पुर्नवास के आयाम।
२. अधिगम अक्षम, प्रशिक्षण मॉड्यूल, एस आई. ई आर. टी उदयपुर।
३. गुप्ता एस. पी. अल्का गुप्ता (२००८) ,शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा
पुस्तक सदन, आगरा।
४. सफलता एवसप्रेस (सितम्बर११, २०२१)
५. सागर अकेडमी, अधिगम असमर्थ बालकों की कक्षा का प्रबंधन (जून ४, २०२०)
६. कुमार पंकज, (जनवरी २०१३) नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द इमपॉवरमेंट ऑफ परसन विद् विजुअल डिसेबिलिटी
७. स्नायुतंत्र की विकासात्मक अक्षमताओं का परिचय
८. उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
9- http: //www. Safalta.com/blog
10- http: //testbook.com/question
11- http: //www. Shaalaa. Com
12- http: //bedhindiarticles.blogspot.com

श्रीमति कंचन चौरसिया